नईदुनिया

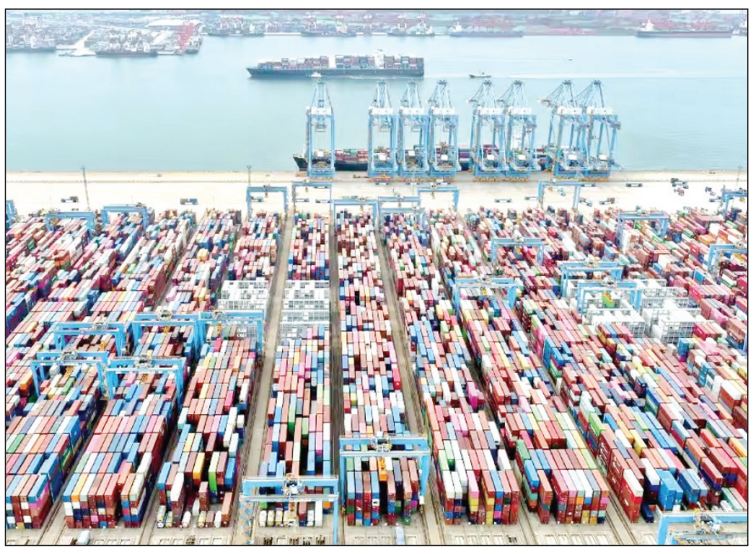

भारत-अमेरिका ट्रेड डील में फंसा पेंच, अमेरिकी दबाव को मानने से भारत का इनकार

नई दिल्ली

भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित ट्रेड डील में कुछ मुद्दों को लेकर मामला फंसता नजर आ रहा है। भारत और अमेरिका के प्रतिनिधियों के बीच 4 से 10 जून के बीच दिल्ली में आपसी व्यापार से जुड़े सभी मुद्दों पर विस्तार से बातचीत हुई। इसके बाद अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के कुछ सदस्य वापस लौट गए, जबकि कुछ सदस्यों की अभी भी भारतीय प्रतिनिधिमंडल से बातचीत जारी है। बताया जा रहा है कि एग्रीकल्चर, डेयरी, मेडिकल और डिजिटल सर्विसेस को लेकर भारत ने अमेरिका की मांग को पूरी तरह से ठुकरा दिया है। अमेरिका इन सेक्टर्स को ओपन करने का दबाव बना रहा है लेकिन भारत ने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया है। भारतीय पक्ष का मानना है कि दोनों देशों के बीच होने वाली ट्रेड डील पूरी तरह संतुलित होनी चाहिए, जिससे दोनों देशों के हितों का परस्पर ध्यान रखा जा सके। भारत और अमेरिका दोनों देश डोनाल्ड ट्रंप की सरकार द्वारा शुरू की गई टैरिफ पॉलिसी को ध्यान में रखते हुए ट्रेड डील करना चाहते हैं। फिलहाल डोनाल्ड ट्रंप ने रेसिप्रोकल टैरिफ पर 8 जुलाई तक के लिए रोक लगा दी है। यही कारण है कि दोनों देशों के प्रतिनिधिमंडल 8 जुलाई के पहले ट्रेड डील को आखिरी रूप दे देना चाहते हैं, ताकि दोनों देशों के बीच होने वाले परस्पर कारोबार पर कोई असर न पड़े। ट्रेड डील को लेकर शुरू हुई बातचीत में अमेरिकी पक्ष पहले से ही डेयरी और एग्रीकल्चर सेक्टर को ओपन करने का दबाव बना रहा है। दूसरी ओर, भारत ने इन क्षेत्रों को संवेदनशील मानते हुए खोलने से इनकार कर दिया है। भारतीय पक्ष का मानना है कि अगर डेयरी और एग्रीकल्चर जैसे सेक्टर्स को पूरी तरह से ओपन कर दिया जाता है, तो इससे इन सेक्टर्स में विदेशी कंपनियों के साथ होने वाली प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित करना मुश्किल हो जाएगा, जिससे भारतीय कारोबारियों को नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। जानकारों का कहना है कि भारत द्वारा इन सेक्टर्स को ओपन करने से साफ-साफ इनकार कर देने की वजह से भारत-अमेरिका ट्रेड डील के बीच गतिरोध की स्थिति बन गई है। अमेरिका का कहना है कि अगर भारत इन सेक्टर्स को ओपन करने के लिए तैयार नहीं होता है, तो फिर दोनों देशों के बीच ट्रेड डील नहीं हो सकती है। जानकारों के मुताबिक अमेरिकी पक्ष एग्रीकल्चर गुड्स और डेयरी प्रोडक्ट्स पर ड्यूटी में भारत की ओर से तो बड़ी कटौती की मांग कर रहा है, लेकिन इसके बदले वो भारतीय उत्पादों को अमेरिकी बाजार में आसान एंट्री देने के लिए तैयार नहीं है। बताया जा रहा है कि बातचीत के दौरान अभी तक दोनों पक्ष ट्रेड डील को जल्द से जल्द अंतिम रूप देने की बात पर तो सहमति जता रहे हैं, लेकिन जिन मुद्दों पर गतिरोध बना हुआ है, उन पर अभी रास्ता निकलता नहीं दिख रहा है। हालांकि दावा किया जा रहा है कि 8 जुलाई के पहले कोई ना कोई रास्ता निकाल लिया जाएगा।

न्यूज ब्रीफ

यूरोपीय संघ एफटीए से 'ऊर्जा और कच्चा माल' अध्याय हटाने पर राजी

नई दिल्ली। भारत ने यूरोपीय संघ (ईयू) को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के तहत 'ऊर्जा और कच्चा माल' अध्याय को बातचीत से अलग रखने तैयार कर लिया है। यूरोपीय संघ ने एकतरफा तरीके से उस अध्याय को शामिल किया था। इसमें भारत से पेट्रोलियम उत्पादों, रसायनों, कपास, लौह और इस्पात, तांबा और अन्य महत्वपूर्ण धातुओं जैसे कच्चे माल की निर्बाध आपूर्ति की प्रतिबद्धता अनिवार्य करने का प्रावधान था। 12 से 16 मई को नई दिल्ली में मुक्त व्यापार समझौते के लिए 11वें दौर की बातचीत के बाद यूरोपीय आयोग ने कहा था कि इस पर बात करने से पहले सहमति बनी थी कि ऊर्जा और कच्चे माल के अध्याय पर चर्चा को फिलहाल अलग रखा जाएगा। कोविड-19 महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध जैसी भू-राजनीतिक घटनाओं के कारण कई देशों में ऊर्जा और कच्चे माल की आपूर्ति की सुरक्षा को लेकर जबरदस्त रुचि पैदा हुई है। चीन द्वारा हाल ही में दुर्लभ खनिज मैग्नेट के निर्यात पर प्रतिबंध ने भी विविध स्रोतों से विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करने की जरुरत बताई।
यूरोपीय संघ अधिकांश कच्चे माल की आपूर्ति के लिए पूरी तरह तीसरे देशों पर निर्भर है। आपूर्ति जोखिम को कम करने के लिए यूरोपीय संघ ने तय किया है कि 2030 से किसी भी कच्चे माल की आपूर्ति का 65 फीसदी से ज्यादा हिस्सा किसी एक देश से आयात नहीं किया जाएगा। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव के संस्थापक ने कहा कि यूरोपीय संघ का व्यापार समझौते का रुख विरोधाभासों से भरा है क्योंकि वह विकासशील देशों से कोई प्रतिबंध नहीं चाहता है जबकि कार्बन-उत्सर्जन वाली वस्तुओं पर कर, सख्त प्रौद्योगिकी हस्तांतरण नियंत्रण जैसे प्रतिबंध को लागू करने का अधिकार अपने पास रखता है।

अगले पांच साल में भारतीय कंपनियां करेंगी बड़े पैमाने पर निवेश

नई दिल्ली। भारत की कंपनियां अगले पांच साल में बड़े पैमाने पर निवेश करने की योजना बना रही हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक इस दौरान पूंजीगत खर्च दोगुना होकर 850 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। बिजली, बिजली ट्रांसमिशन, एयरलाइंस और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे सेक्टर इस निवेश के केंद्र में रहेंगे। मजबूत बैलेंस शीट, बेहतर नकदी प्रवाह और सरकार की अनुकूल नीतियों के दम पर कंपनियां अपने कारोबार को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की तैयारी में हैं। बिजली, एयरलाइंस और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे सेक्टर होंगे निवेश का केंद्र रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत की शीर्ष 100 लिस्टेड कंपनियां, जिनका कुल राजस्व 1 ट्रिलियन डॉलर और 2025 में 150 अरब डॉलर का है, इस निवेश का बड़ा हिस्सा अपनी कमाई से पूरा करेंगी। इससे उनका कर्ज नियंत्रण में रहेगा। इसके अलावा अनलिस्टेड रिन्यूएबल एनर्जी और एयरलाइन कंपनियों के बड़े निवेश प्लान को भी इस रिपोर्ट में शामिल किया गया है। बिजली और ट्रांसमिशन सेक्टर में करीब 300 अरब डॉलर का नया निवेश किया जाएगा, जो कुल कैपेक्स का एक तिहाई से ज्यादा है।

भारत में 'रिनॉल्ट बोरेल' के नाम से पेश की जाएगी बिगस्टेर

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में 7-सीटर एसयूवी की श्रेणी में रिनाल्ट कंपनी भी अपनी नई एसयूवी के साथ उतारने की तैयारी कर रही है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में बिगस्टेर नाम से जानी जाने वाली यह एसयूवी भारत में 'रिनॉल्ट बोरेल' के नाम से पेश की जाएगी। टेस्टिंग के दौरान इसकी स्पाई शॉट्स सामने आई हैं, जिसमें यह एक बड़ी और दमदार एसयूवी के रूप में नजर आई। भारत में इसे 7-सीटर लेआउट में लॉन्च किया जा सकता है, जिससे यह सीधे तौर पर लोकप्रिय एसयूवीको चुनौती देगी। रिनॉल्ट बोरेल को भारत में खास तौर पर डिजाइन और फीचर्स के लिहाज से प्रतिस्पर्धी बनाया जाएगा। इसमें रडार-बेस्ड अडास, 10.1-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वेंटिलेटेड सीट्स, वायरलेस चार्जिंग और ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल जैसे फीचर्स दिए जा सकते हैं। सुरक्षा के लिहाज से इसमें छह एयरबैग्स, एबीएस, ईबीडी, ईएससी और इसोफिक्स माउंट्स की संभावना है। इंजन विकल्पों की बात करें तो रिनॉल्ट बोरेल में पेट्रोल, माइल्ड-हाइब्रिड और स्ट्रॉन्ग-हाइब्रिड पावरट्रेन दिए जा सकते हैं।

पीयूष गोयल ने स्विट्जरलैंड के प्रमुख उद्योगपतियों से भारत के 11 साल के विकास पर की चर्चा, सभी ने किया निवेश का वादा, अब जाएंगे स्वीडन

बर्न (स्विट्ज़रलैंड)

भारत के केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योगमंत्री पीयूष गोयल ने स्विटजरलैंड के खूबसूरत शहर बर्न की दो दिवसीय सफल यात्रा का समापन, गर्मजोशी, मधुर यादों और नई साझेदारियों के साथ किया। गोयल ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा, भारत की विकास कहानी में स्विस उद्योग जगत के नेताओं और प्रमुख हितधारकों की जिज्ञासा, रुचि और विश्वास से बेहद प्रभावित हूं। आगे रोमांचक अवसर हैं।

पीयूष गोयल ने एक्स पर लिखा, स्विसमेम उद्योग दिवस पर अलग-अलग इंडस्ट्री से जुड़े 1,000 से अधिक स्विस उद्यमियों के सम्मेलन को संबोधित करना मेरे लिए सम्मान की बात रही। मेरे साथ स्विस फेडरल काउंसलर पर्मेलिन जी भी शामिल हुए। उन्होंने पिछले 11 वर्ष में प्रौद्योगिकी, नवाचार और व्यापार के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान करने के मामले में भारत के उल्लेखनीय परिवर्तन को उजागर करने के अवसर का लाभ उठाया।

केंद्रीयमंत्री गोयल ने लिखा, स्विस उद्योग जगत को भारत में विकास और निवेश के लिए अद्वितीय अवसरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया है। उन्होंने भारत के कुशल और प्रतिभाशाली कार्यबल और सुविधाजनक व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाया। अब भारत-स्विस संबंधों का नया मजबूत अध्याय शुरू हो रहा है। इस सम्मेलन की प्रमुख भागीदार हेलेन बुडलिगर अर्टिडा ने गोयल की एक्स पोस्ट को जस का तस अपने एक्स हैंडल पर साझा किया। उल्लेखनीय है स्विसमेम स्विट्जरलैंड के मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग उद्योगों (एमईएम उद्योगों) और संबंधित प्रौद्योगिकी-उन्मुख क्षेत्रों का प्रमुख संघ है।

गोयल ने कहा कि इस दौरे के दौरान दुनिया की सबसे बड़ी कंटेनर शिपिंग कंपनी और परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स में वैश्विक अग्रणी, मेडिटेरेनियन शिपिंग कंपनी के सीईओ सोरेन टॉफ्ट के साथ अत्यंत उपयोगी बातचीत हुई। उन्होंने भारत के तेजी से बढ़ते शिपिंग, लॉजिस्टिक्स और बंदरगाह बुनियादी ढांचे के विस्तार करने में निवेश की रुचि दिखाई। निकट भविष्य में महत्वपूर्ण साझेदारी की आशा है। इसके अलावा टिकाऊ पैकेजिंग समाधानों में अग्रणी एसआईजी ग्रुप के सीईओ सैमुअल सिग्रिस्ट के साथ सार्थक चर्चा हुई।

उन्होंने कहा कि बर्न में विश्वस्तर पर मान्यता प्राप्त फार्मा और लाइफ साइंसेज समूह के प्रतिनिधियों से नोवार्टिस के नेतृत्व के साथ बातचीत उपयोगी रही। चर्चा भारत में उनकी अनुसंधान एवं विकास सुविधा और अत्याधुनिक, किफायती स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने और आगे नवाचार करने के अवसरों पर केंद्रित रही। गोयल ने स्विस घड़ी और आभूषण निर्माण कंपनी द स्वैच ग्रुप एजी के सीएफओ थिएरी केनेल से भी मुलाकात की है।

चीन की मैग्नेट पाबंदी से वाहन कंपनियां के उत्पादन पर मंडरा रहा खतरा

नई दिल्ली। चीन से दुर्लभ मैग्नेट का आयात करने वाली इकाइयां अब अप्रत्याशित स्थिति से जुड़े प्रावधान का सहारा लेने पर विचार कर रही हैं। वे अपनी कानूनी टीम से इस बारे में सलाह ले रही हैं। ये इकाइयां दुर्लभ मैग्नेट की आपूर्ति मूल उपकरण विनिर्माताओं को करती हैं। चीन बड़े पैमाने पर इन दुर्लभ खनिज मैग्नेट की आपूर्ति दूसरे देशों को करता है। आयातक अब 'फोर्स मेजर' का सहारा लेने पर कर रहे विचार ये आयातक इसलिए अप्रत्याशित स्थिति का प्रावधान लागू करने पर विचार कर रहे हैं क्योंकि इससे उन्हें अनुबंध समय पर पूरा नहीं करने की सूरत में जुर्माने से बचने में मदद मिलेगी। उन्हें डर है कि इनकी आपूर्ति समय पर नहीं करने पर जुर्माना लग सकता है। मैग्नेट की आपूर्ति रुकने पर वाहन कंपनियां उत्पादन नहीं कर पाएंगी। चीन ने अप्रैल में दुर्लभ खनिजों एवं मैग्नेट के निर्यात पर पाबंदी लगा दी है जिससे भारत में भी वाहन उद्योग और अन्य क्षेत्रों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। इस साल 4 अप्रैल से 35 आयातकों को चीन से दुर्लभ मैग्नेट की आपूर्ति पूरी तरह ठप है। चीनी सरकार के समक्ष इनके आयात के लिए किए गए उनके आवेदन भी मंजूर नहीं हुए हैं। सोना-कॉमस्टार ने चीन के नए निर्यात नियंत्रण नियमों के अंतर्गत आवेदन किया था लेकिन वह अस्वीकार हो गया है।

डेट म्युचुअल फंड्स मई में नहीं जीत सके निवेशकों का भरोसा, लगा तगड़ा झटका

नई दिल्ली

गिरावट के बावजूद कई डेट फंड कैटेगरी में निवेशकों की दिलचस्पी बढ़ी

डेट म्युचुअल फंड्स मई में निवेशकों का भरोसा नहीं जीत सके। बीत महीने इन फंड्स में 15,908 करोड़ रुपए का नेट आउटफ्लो देखा गया। यह अप्रैल में हुई 2.19 लाख करोड़ की मजबूत इनफ्लो के उलट था। डेट म्युचुअल फंड्स में यह निकासी मुख्य रूप से लिक्विड और ओवरनाइट फंड में बड़े रिडेम्पशन के कारण हुई। गिरावट के बावजूद कई डेट फंड कैटेगरी में निवेशकों की दिलचस्पी बढ़ी। कॉरपोरेट बॉन्ड फंड्स ने 11,983 करोड़ रुपए के इनफ्लो के साथ बढ़त हासिल की है।

आंकड़ों के मुताबिक मई में निवेशकों ने अकेले लिक्विड फंड्स से 40,205 करोड़ रुपए निकाले। जबकि अप्रैल में इस कैटेगरी में 1,18,656 करोड़ का निवेश आया। वहीं, बीत महीने ओवरनाइट फंड्स में 8,120 करोड़ रुपए का नेट आउटफ्लो दर्ज किया गया।

जबकि अप्रैल में इस कैटेगरी में 23,899 करोड़ का इनफ्लो आया था। ये दोनों कैटेगरी, आमतौर पर बड़े संस्थागत निवेशों को आकर्षित करती हैं। ये फंड्स शॉर्ट टर्म में लिक्विडिटी की जरूरतों और ट्रेजरी निर्णयों के प्रति ज्यादा संवेदनशील हैं।

मिरे असेट इन्वेस्टमेंट मैनेजर्स (इंडिया) की डिस्ट्रीब्यूशन और स्ट्रेटेजिक अलायंस की प्रमुख बताती है कि मई 2025 में डेट म्युचुअल फंड्स से 15,908 करोड़ की निकासी का एक कारण एडवांस टैक्स भुगतान के लिए मौसमी रिडेम्पशन दबाव हो सकता है। 15 जून एडवांस टैक्स भुगतान की एक बड़ी समय-सीमा होती है, खासकर कंपनियों के लिए। कंपनियां अक्सर इन भुगतानों की तैयारी के लिए मई में अपने लिक्विड और अल्ट्रा-शॉर्ट-टर्म डेट फंड्स से निवेश निकाल लेती हैं। बीपीएन फिनकैप के डायरेक्टर एके निगम ने कहा कि निवेशक अब डेट से इक्विटी की ओर जा रहे हैं। वे उम्मीद कर रहे हैं कि ब्याज दरों में कटौती से उन्हें इक्विटी में बेहतर रिटर्न मिलेगा।

हुंडई ने लॉन्च की वर्ना एसएक्स प्लस, कीमत और फीचर्स ने ग्राहकों किया आकर्षित

दक्षिण कोरियाई कार निर्माता हुंडई ने भारत में अपनी मशहूर सेडान वर्ना का नया एसएक्स प्लस वेरिएंट पेश किया है, जो कीमत और फीचर्स के लिहाज से ग्राहकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बन गया। यह वेरिएंट मैनुअल और ऑटोमैटिक दोनों ट्रांसमिशन में उपलब्ध है, जिनकी एक्स-शोरूम कीमतें 13.79 लाख और 15.04 लाख रुपए रखी गई हैं। इस नए वेरिएंट में पहले टॉप एसएक्स (ओ) मॉडल में मिलने वाले कई प्रीमियम फीचर्स शामिल किए गए हैं, जिनमें एलईडी हेडलाइट्स, 16-इंच एलॉय व्हील्स, रियर स्पॉइलर, फ्रंट पार्किंग सेंसर्स, 8-स्पीकर बोस साउंड सिस्टम, हीटेड और वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स तथा लेदरेट अपहोल्स्ट्री जैसी सुविधाएं प्रमुख हैं। वर्ना एसएक्स प्लस में 1.5 लीटर का 4-सिलिंडर नेचुरल एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन दिया गया है, जो 115एचपी की पावर और 143.8एनएम का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन 6-स्पीड मैनुअल या सीवीटी ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ उपलब्ध है और दावा किया गया है कि यह कार 18 से 19 किमी प्रति लीटर का माइलेज देती है। सुरक्षा के लिहाज से भी यह वेरिएंट काफी दमदार है, जिसमें छह एयरबैग्स, एबीएस के साथ ईबीडी, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ईएससी), टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (टीपीएमएस) और रियर पार्किंग कैमरा जैसे फीचर्स स्टैंडर्ड दिए गए हैं। इसके साथ ही कंपनी ने अपने चुनिंदा मॉडल्स के लिए नया वायर्ड-टू-वायरलेस एडॉप्टर भी पेश किया है जिसकी कीमत 4,500 रखी गई है। यह एडॉप्टर वायरलेस एप्पल कारप्ले और एन्डार्ड ऑटो को सपोर्ट करता है और वेरना एसएक्स(ओ), एसएक्स टूबो और एसएक्स(ओ) टूबो वेरिएंट्स के लिए उपयुक्त है।

रेयर अर्थ्स की कमी के चलते मारुति सुजूकी ने ई-विटारा का प्रोडक्शन किया कम

चीन के प्रतिबंधों ने ग्लोबल ऑटो इंडस्ट्री को हिला कर रख दिया

नई दिल्ली

रेयर अर्थ्स की कमी के चलते मारुति सुजूकी ने अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार ई-विटारा के नियर टर्म प्रोडक्शन टारगेट को दो-तिहाई कम कर दिया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एक डॉक्यूमेंट से पता चला है कि चीन के निर्यात प्रतिबंध ने ऑटो इंडस्ट्री के सामने संकट पैदा कर दिया है। भारत की टॉप कार मेकर मारुति सुजूकी अब अप्रैल और सितंबर के बीच करीब 8,200 ई-विटारा बनाने की योजना बना रही है, जबकि वास्तविक टारगेट 26,500 था। इससे पहले सोमवार को कंपनी ने कहा था कि उसने अभी तक सप्लाई पर रेयर अर्थ मेटल्स के संकट से कोई असर नहीं देखा है।

रिपोर्ट में डॉक्यूमेंट के मुताबिक कंपनी ने रेयर अर्थ्स मैटीरियल्स में सप्लाई की कमी का हवाला दिया। ये मैग्नेट और अलग-अलग तरह की हाईटेक इंडस्ट्रीज में अन्य कम्पोनेंट को बनाने के लिए जरूरी है। डॉक्यूमेंट में कहा गया है कि मारुति अभी भी मार्च 2026 को समाप्त होने वाले साल के लिए 67,000 ईवी के अपने प्रोडक्शन टारगेट को बाद के महीनों में प्रोडक्शन बढ़ाकर पूरा करने की योजना बना रही है। कुछ रेयर अर्थ्स निर्यातों पर चीन के प्रतिबंधों ने ग्लोबल ऑटो इंडस्ट्री को हिला दिया है। कंपनियों ने सप्लाई चेन पर गंभीर असर पड़ने की बात कही, जबकि अमेरिका, यूरोप और जापान की कुछ कंपनियों को बीजिंग से लाइसेंस मिलने के बाद सप्लाई में आसानी दिख रही है। भारत अभी भी चीन की मंजूरी का इंतजार कर रहा है। मारुति ने जनवरी में ऑटो एक्सपो में ई-विटारा को पेश किया था। यह देश में मारुति के ईवी पुश के लिए अहम है। मोदी सरकार ने 2030 तक कुल ऑटो सेल्स में ईवी सेल्स 30 फीसदी तक करने का लक्ष्य रखा है, जो पिछले साल करीब 2.5 फीसदी थी।

ग्लोबल मार्केट से पॉजिटिव संकेत, एशियाई बाजार में तेजी

नई दिल्ली

ग्लोबल मार्केट से पॉजिटिव संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान मजबूती के साथ कारोबार करने के बाद बंद हुए। हालांकि डाउ जॉन्स फ्यूचर्स गिरावट के साथ कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार पिछले सत्र के दौरान मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। वहीं एशियाई बाजार में आमतौर पर खरीदारी का रुख बना हुआ है।

अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान खरीदारी का रुख बना रहा, जिसके कारण वॉल स्ट्रीट के सूचकांक बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहे। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.55 प्रतिशत की तेजी के साथ 6,038.81 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह नैस्डेक ने 123.75 अंक यानी 0.63 प्रतिशत उछल कर 19,714.99 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 87.41 अंक यानी 0.20 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 42,779.46 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है।

यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान लगातार उतार-चढ़ाव होता रहा। एफटीएसई इंडेक्स 0.23 प्रतिशत की मजबूती के साथ 8,853.08 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह सीएसी इंडेक्स ने 0.16 प्रतिशत की बढ़त के साथ 7,804.33 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके विपरित डीएएक्स इंडेक्स 186.76 अंक यानी 0.78 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 23,987.56 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

एशियाई बाजार में आमतौर पर खरीदारी का रुख बना हुआ है। एशिया के नौ बाजार में से सात के सूचकांक बढ़त के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि दो सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में बने हुए हैं। जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 0.54 प्रतिशत की गिरावट के साथ 7,192.05 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स 0.51 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 3,913.79 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

दूसरी ओर, गिफ्ट निफ्टी 0.12 प्रतिशत की मजबूती के साथ 25,175 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह सेट कंपोजिट इंडेक्स 0.20 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,141.48 अंक के स्तर पर आ गया है। हैंग सेंग इंडेक्स ने बड़ी छलांग लगाई है। फिलहाल ये सूचकांक 234.39 अंक यानी 0.97 प्रतिशत की बढ़त के साथ 24,397.26 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह ताइवान वेटेड इंडेक्स 149.72 अंक यानी 0.67 प्रतिशत की तेजी के साथ 22,391.86 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। इसके अलावा कोस्पी इंडेक्स 0.67 प्रतिशत उछल कर 2,891.21 अंक के स्तर पर, शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 0.53 प्रतिशत की बढ़त के साथ 3,402.77 अंक के स्तर पर और निक्केई इंडेक्स 158.54 अंक यानी 0.41 प्रतिशत की मजबूती के साथ 38,370.05 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहे हैं।